तर्ज--मैं तेरे पास आना चाहता हूं

मुझे बस प्यार से इक बार देखो,
मैं खुद को भूल जाना चाहती हूं
जमाना वो पुराना याद आये,
उसी में डूब जाना चाहती हूं
1--जमाना रूठता है रूठ जाये
मुझे तेरे बिना ना चैन आये
सदा दीदार पाना चाहती हूं
2--सनम की दूरियां जीने ना देगीं
अपनी मजबूरीयां मरने ना देगीं
मैं अब मंजिल को पाना चाहती हूं
3--कभी सोचा नही था दूर रहना
कभी सोचा नही था भूल जाना
मैं खोया ईश्क पाना चाहती हूं
4--पिया पर्दानशीं कब तक रहोगे
ये नाटक पर्दे पर कब तक करोगे
असल श्रृंगार मैं अब देखना चाहती हूं

Nijanand App